आधुनिक प्रमुख चार तन्त्र चित्रकारों की कृतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

(के.सी.एस.पणिकर, एस.एच रज़ा, जी.आर.संतोष, शोभा ब्रूटा)

दयालबाग़ शिक्षण संस्थान (डीम्ड यूनिवर्सिटी) आगरा से
चित्रकला में पी–एच०डी० की उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध–प्रबन्ध की रूपरेखा

2014

शोध निर्देशक

प्रो० अश्विनी कुमार शर्मा
ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग
कला संकाय
डी०ई०आई० (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा

शोध छात्रा

साक्षी गुप्ता
ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग
कला संकाय
डी०ई०आई० (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा

"आधुनिक प्रमुख चार तन्त्र चित्रकारों की कृतियों का विष्लेषणात्मक अध्ययन"

(के. सी. एस. पणिकर, एस. एच. रज़ा, जी. आर. संतोष, शोभा ब्रूटा)

दयालबाग़ षिक्षण संस्थान (डीम्ड यूनिवर्सिटी) आगरा से
चित्रकला में पी–एच॰ डी॰ की उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध–प्रबंध की रूपरेखा

2014

संकाय प्रमुख की संस्तुति हेतु

प्रो० उर्मिला आनन्द,
अध्यक्ष संस्कृत विभाग,
कला संकाय,
डी०ई०आई० डीम्ड यूनिवर्सिटी
दयालबाग़, आगरा

विभागाध्यक्ष की संस्तुति हेतु

प्रो० रागिनी रॉय
अध्यक्ष ड्राइंग एण्ड पेंन्टिग विभाग
कला संकाय,
डी०ई०आई० डीम्ड यूनिवर्सिटी
दयालबाग़, आगरा

शोध निर्देषक

प्रो० अष्विनी कुमार शर्मा
ड्राइंग एण्ड पेंन्टिग विभाग
कला संकाय,
डी०ई०आई० डीम्ड यूनिवर्सिटी
दयालबाग़, आगरा

शोध छात्रा

साक्षी गुप्ता
ड्राइंग एण्ड पेंन्टिग विभाग
कला संकाय,
डी०ई०आई० डीम्ड यूनिवर्सिटी
दयालबाग़, आगरा

"आधुनिक प्रमुख चार तन्त्र चित्रकारों की कृतियों का विष्लेषणात्मक अध्ययन"

(के. सी. एस. पणिकर, एस. एच. रज़ा, जी. आर. संतोष, शोभा ब्रूटा)

विषय सूचीः–

शोध संकल्पना

साहित्यिक पुनरवलोकन

परिकल्पना

उद्देष्य

चर

कार्य प्रणाली :–

1– अनुसंधान अभिकल्प

2– प्रदत्त संकलन :–

अ– प्राथमिक

ब– द्वितीयक

3– प्रतिदर्ष

4– साक्षात्कार

5– प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया

6– सीमा

निष्कर्ष

वर्तमान परिदृष्य में अध्ययन के आवेदन

शोध संकल्पना :–

कला, संसार में मानव को मानवोत्तम बनाती है। कभी यह प्रेरणा तो कभी जीवन का लक्ष्य तो कभी आत्म चेतना के गूढ़ व गहनतम रहस्य को समझने का साधन है। जब से सृष्टि की रचना हुई तब से अब तक कला व मानव का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। मानव अपने भावों की अभिव्यक्ति सर्वप्रथम कला के द्वारा ही करता रहा है, इसके लिये उसने केवल चित्रकला का ही नहीं अपितु अन्य ललित कलाओं का भी सहारा लिया। मानव ने स्वयं व प्रकृति के सम्बन्ध को समझने के लिये सर्वप्रथम कला को साधन बनाया।

भारतीय कला में धार्मिक तथा दार्षनिक मान्यताओं की अभिव्यक्ति आरम्भ से ही की गई है। फिर चाहे वह प्रस्तर कालीन कला हो या सिन्धु घाटी सभ्यता ,लघु चित्रण परम्परा हो या अत्याधुनिक समकालीन कला। मानव आदि काल से ही प्रकृति व ब्रह्माण्ड के गूढ़ रहस्यों को जानने के लिये निरन्तर प्रयासरत रहा है। विजय, उल्लास, इच्छा, उदासीनता, आनन्द आदि मनोभावों को उसके सृजनषील मन ने विभिन्न विधाओं व अनेक माध्यमों में अभिव्यक्त किया।

भावों की अभिव्यक्ति के लिये कलाकारों ने चित्रकला में विभिन्न विषयों जैसे – राधा–कृष्ण, नायक–नायिका, रागमाला, दरबारी जीवन, सामाजिक क्रिया–कलाप, पुराण आदि को चित्रित किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने तान्त्रिक अनुष्ठानों व क्रिया–कलापों को अपनी कला का विषय बनाया।

तन्त्र का रहस्यमयी और गूढ़ ज्ञान जो कठोर अध्ययन से ही आ सकता है, वह विज्ञान में प्रवेष किये बिना या तन्त्र विज्ञान की षिक्षा प्राप्त किये बिना नहीं आ सकता है। एक साधारण मनुष्य के लिए ये सभी मन्त्र, यन्त्र आदि व्यर्थ की मानव क्रियाऐं है, परन्तु एक जिज्ञासु मनुष्य के लिये मन्त्र–परातत्व ज्ञान व शक्ति की प्राप्ति है और पंचकर साधना का प्रतीक है, जो सांसारिक बंधनों से मुक्ति प्राप्त कराता है। तन्त्र साधना माया के जाल को काटती है और मनुष्य को रहस्यमयी अनुभवों के उच्च स्तर पर पहुँचाती है।

तन्त्र की आत्मिक विद्या चेतना को सूचित करती है, जो कि उत्तेजना से पूर्ण अन्तः विचारों संकल्पनाओं के मध्य सम्बन्ध की विषेषता है। तन्त्र साधना के माध्यम से मानव मस्तिष्क चेतना व वरदान के पवित्र स्तर पर पहुँचता है। एक साधक इसके द्वारा ज्ञान की उस सीमा तक पहुँचता है, जो उसे मोक्ष के मार्ग पर ले जाती है। तन्त्र मनुष्य के व्यक्तित्व में विकास व उन्नति को एकीकरण करने में उसका मार्गदर्षन करता है। तन्त्र रहस्यवाद है, यह मानव परम षिव को वास्तविकता की ओर ले जाता है, जो कि पराधीनता और विरोध से परे है। कुण्डलिनी की जागृति, मन्त्रों का चमत्कार और यन्त्रों का प्रयोग इन सभी का रहस्यमयी महत्व है।

कलाकार कुछ नवीन सृजन के लिये सदैव प्रयासरत रहा, जिसके फलस्वरूप कला जगत में नित नवीन विधाओं का उद्भव होता गया। लगभग सन् 1950–1960 में कलाकारों ने पाष्चात्य शैली की अर्मूतता के साथ दार्षनिक मनोभावों को मिश्रित कर नवीन दृष्टिकोण से कलाकृतियाँ बनानी प्रारम्भ कीं, जिसे उन कलाकारों ने नव–तान्त्रिकवाद नाम दिया। इन कलाकृतियों में आकार अर्मूत थे, परन्तु उनका निर्माण उद्देष्य दार्षनिक था। इन कलाकृ

तियों के निर्माण के लिये कलाकारों ने तान्त्रिक प्रतीकों, ज्यामितीय आकृतियों व वर्णाक्षरों आदि का प्रयोग किया।

तन्त्र :– तन्त्र शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा की 'तन्' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है 'विस्तार'। 'त्र' का अर्थ है 'साधन'। इस प्रकार तन्त्र शब्द का अर्थ है 'ज्ञान के साधन का विस्तार' इस दृष्टि से तन्त्र न केवल धर्म है और न ही जीवन की रहस्यमयी पद्धति मात्र अपितु यह जीवन का अनुभव एवं एक ऐसा साधन है, जिसके माध्यम से मनुष्य स्वयं में निहित आध्यात्मिक शक्ति का विकास कर सकता है।

परम शक्ति के रहस्य को तार्किकता से नहीं समझा जा सकता। यह ज्ञान, तार्किक धारणा के परे है। वेद इस वास्तविकता का नकारात्मक विवरण देते हैं। वेदों के अनुसार वास्तविकता को तर्क के अनेक स्तरों द्वारा नहीं समझा जा सकता। परन्तु तन्त्र एक अर्न्तज्ञान का विज्ञान परमात्मा की प्राप्ति के लिये तन्त्र के परम तात्विक (रहस्यमयी) व वैज्ञानिक आधार इस केन्द्रिक विचार के स्तरों की विभिन्नता को बताते हैं जिसमें कुण्डलिनी के जाग्रत होने पर दैवत्व की प्राप्ति होती है। कुण्डलिनी का यह जागरण रहस्यमय दैवत्व प्राप्ति की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया एक मनुष्य का अन्तः आत्मिक स्थानान्तरण प्रक्रिया के मार्ग पर ले जाती है, कुण्डलिनी की जाग्रति भौतिकता, ऊर्जा व आन्तरिक शक्तियों में स्थानान्तरण लाती है। जब यह यान्त्रिक ऊर्जा को आन्तरिक ऊर्जा में बदलता है तो इसे 'उपविद्या' कहते हैं। इस शक्ति के शारीरिक या भौतिक लाभ के लिये किये गये अभ्यास को 'अविद्या साधना' कहते हैं। मानसिक शक्ति को आत्मिक शक्ति में बदलने को 'विद्या तन्त्र' कहते हैं।

तन्त्र साधना के मार्ग में यंत्र, मंत्र, योग, ध्यान, समाधि आदि सिद्धि के लिये आधरभूत क्रियायें स्वीकार की जाती हैं। मंत्र और यंत्र, तन्त्र विद्या के महत्वपूर्ण अंग माने जाते हैं।

यन्त्र :– यन्त्र शब्द 'यम्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है नियमित करना, संयमित करना या केन्द्रित करना। समस्त तान्त्रिक कला मूलरूप में यन्त्रों पर आधारित है। यन्त्रों का निर्माण रेखा, बिन्दु, बीजाक्षर, वर्णाक्षर आदि विभिन्न स्वरूपों के अंकन से होता है। यन्त्र एक ज्यामितीय आकृति होती है जो कि देवी या देवता के विषेष स्वरूप को प्रस्तुत करती है। यह आकृति ज्यामितीय आकारो से बनती है जिसमें संख्याओं व संस्कृत भाषा के शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है।

मन्त्र :– मन्त्र, तन्त्र साधना का प्राण है। मन्त्र शास्त्रीय सूत्र हैं, जिनकी सुनिश्चित यौगिक पद्धति से साधना करके सांसारिक अथवा आलौकिक उद्देष्य की प्राप्ति की जा सकती है। तन्त्र के अनुसार 'अ' से 'ज्ञ' तक के अक्षर वर्ण मातृका बनाते हैं जो साक्षात् शक्ति के स्त्रोत हैं और बीज मन्त्रों के मूल हैं।

तन्त्र साधना मनुष्य को कुषलता के उच्च एवं आध्यात्मिक स्तरों की ओर ले जाता है, और एक योगी अपने जीवन के परम लक्ष्य की प्राप्ति तब करता है जब वह परम षिवा के साथ एक हो जाता है और तब इसे परा–साम्वित कहते हैं।

इन्हीं सब परा भौतिक तथ्यों व विचारों के आधार पर समकालीन कलाकारों ने तन्त्र का प्रयोग कला में करके परम ब्रह्म की अराधना की है। तन्त्र चित्राकृतियां भौतिक तत्वों व

ब्रह्माण्डीय तत्वों के मध्य समानता के अध्ययन का एक माध्यम हैं। ये कृतियां ज्ञान व विवेक के आधार पर पूर्ण रूपेण अद्वितीय हैं। ये कृतियां पूर्णतयः अमूर्त व अत्यधिक जटिल हैं। तन्त्र कृतियों की मुख्य विषेषता इनकी अस्पष्टता है।

तन्त्र कृतियों में बहुतायत रूप से अर्मूत व अनेकार्थी आकारों का प्रयोग किया जाता है। अस्पष्टता इन कृतियों की विषेषता है, जो कि दर्षक का ध्यान केन्द्रित करने में सहायक होती है। जब तन्त्र कृतियों द्वारा अराधना की जाती है तब ये कृतियां दैवीय शक्तियों के प्रतीकात्मक रूप को प्रस्तुत करती हैं। यह मात्र कला की विद्या ही नहीं है बल्कि यह ध्यान केन्द्रित करने का साधन है।

समकालीन आधुनिक कला में तन्त्र कला का विकास गुलाम रसूल संतोष, के. सी. एस. पणिकर, सैयद हैदर रज़ा, बिरेन डे, निरोद मजूमदार, मक़बूल फ़िदा हुसैन, सतीष गुजराल, पी. टी. रेड्डी, दीपक बैनर्जी, शोभा ब्रूटा, प्रभाकर कोल्टे आदि कलाकारों के सार्थक प्रयास से हुआ। जिनमें से गुलाम रसूल संतोष, के. सी. एस. पणिकर, सैयद हैदर रज़ा व शोभा ब्रूटा ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

साहित्यिक पुनरवलोकन :–

मेरे शोध का विषय ''आधुनिक प्रमुख तन्त्र चित्रकारों की कृतियों का विष्लेषणात्मक अध्ययन (के. सी. एस. पणिकर, एस. एच. रज़ा, जी. आर. सन्तोष, शोभा ब्रूटा)'' है। अपने विषय से सम्बन्धित मैंने कई पुस्तकें पढ़ीं व मैंने कुछ समकालीन कलाकारों की अनेक विषयों से सम्बन्धित कृतियाँ देखीं जिनमें से तन्त्र विषयों से सम्बन्धित कृतियों ने मुझे आकर्षित किया। जिनसे मुझे इस विषय पर कार्य करने की प्रेरणा मिली। डॉ. गौतम चटर्जी का लेख ''कला में तन्त्र– पुर्नदृष्टि व अर्न्तदृष्टि'' कला दीर्घा vol. 7 अप्रैल 2007 में पढ़ा, जिसमें उन्होंने तन्त्र कला में तन्त्र का स्थान व आधुनिक कलाकारों की तन्त्र कृतियों के निर्माण उद्देष्य व मनोभावों की चर्चा की है। इन कृतियों के निर्माण उद्देष्य, कला, विज्ञान तथा संस्कृति व संस्कार से सम्बन्धित मनोभावों ने मुझे बहुत प्रभावित किया। मैंने, तन्त्र विषय से सम्बन्धित पुस्तक जैसे– **Lallan Prasad Singh** की Tantra- its Mystic and Scientific Basis व **Philip Rowson** की The Art of Tantra, **Ajit Mookerjee** and **Madhu Khanna** की The Tantric Way (Art, Science and Ritual), **Ajit Mookerjee** की The Tantra Art- its Philosophy & Physics, **Indra Sinha** की The Great Book of Tantra का अध्ययन किया ।

परिकल्पना–

कला के अनेक विषयों में से तन्त्र विषय से सम्बन्धित कृतियों ने मेरी जिज्ञासा को और अधिक बढ़या। क्योंकि इन कृतियों में कला के साथ दर्षन, विज्ञान, संस्कार आदि की भी जानकारी मिलती है, इसलिये मैंने इस विधा को अपने शोध का विषय बनाया। इसके अन्तर्गत मैं समकालीन चित्रकला में तन्त्र कला के विकास के क्रम का अध्ययन करूँगी। मैं

इसमें चार प्रमुख नव–तान्त्रिक कलाकारों की कृतियों के कलात्मक अध्ययन के साथ कलाकारों का तंत्र कला के विकास में इनके योगदान की समीक्षा करूँगी।

उद्देष्य–

आज भी तन्त्र काला जादू की एक प्रक्रिया माना जाता है। सम्भवतः इसी कारण यह सदैव अध्ययन की दृष्टि से उपेक्षित रहा है। इस विचारधारा का खण्डन करके एक नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का प्रयास करूँगी। यह तन्त्र आध्यात्मिक संस्कृति (विरासत) और सांस्कृतिक इतिहास का विकसित रूप है, और यह साहित्य में उत्कृष्ट व दर्षन में सर्वोत्तम है जो कि इसका एक मात्र प्रमाणित कथन है। इसके साहित्य का बड़ा हिस्सा आज भी पाण्डुलिपि रूप में भरा पड़ा है। **सर जॉन वुडरफ** ने अपने अथक प्रयासों से यह सिद्ध किया है कि तन्त्र संस्कृति न तो कोई जादू है और न ही कोई अनैतिक क्रियाओं की साधना। पंचकरों (मदिरा, मांस, मछली, मुद्रा व मैथुन क्रिया) की साधना तन्त्र के बारे में अनेक गलत धारणायें उत्पन्न करती है, जो कि तन्त्र प्रतीकात्मकता से परिपूर्ण है। आधुनिक कला में तन्त्र कला का अध्ययन करने का मेरा उद्देष्य तन्त्र कलाकृतियों की भ्रामक तथ्यों को उजागर करने का प्रयास रहेगा है।

चर :–

1– कलाकार

2– कला षिक्षक

3– कला विद्यार्थी

4– कला प्रषंसक एवं कला समीक्षक

5– सहपाठी

6– संग्रहालय

7– कला संग्रहकर्ता

8– पुस्तकें

9– विवरणिका (कैटलॉग)

10– इन्टरनेट

कार्य प्रणाली–

अ– अनुसंधान अभिकल्प– मेरा शोध कार्य समकालीन कलाकारों की कृतियों के दृष्यात्मक कलात्मक व वर्णनात्मक अध्ययन पर आधारित होगा।

ब– प्रदत्त संकलन–

प्राथमिक – कलाकार की मौलिक कलाकृतियाँ।

द्वितीयक– साक्षात्कार, लेख, पुस्तकें, प्रकाषित पत्र–पत्रिकाऐं, समाचार पत्र, बेब–साइट्स, जर्नल्स आदि।

स– नमूने– मेरे द्वारा कलाकारों की लगभग 100–150 कलाकृतियों का चयन कर किया जायेगा। ये कलाकृतियाँ उनकी समस्त तन्त्र कला का प्रतिनिधित्व करेगीं।

द– साक्षात्कार– कला समीक्षकों व कला विद्वानों व कलाकारों का साक्षात्कार।

य– प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया – मेरी प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया कलाकृतियों, चर्चाओं व विवेचनाओं पर आधारित होगी।

र– सीमा– प्रत्येक शोध कार्य की एक सीमा होती है। यह शोध कलाकार एवं कला समीक्षकों के साक्षात्कार, पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, जनरल्स, संग्रहालय, कैटालॉग आदि पर आधारित है।

'आधुनिक प्रमुख चार तन्त्र चित्रकारों की कृतियों का विष्लेषणात्मक अध्ययन'

(के. सी. एस. पणिकर, एस. एच. रज़ा, जी. आर. संतोष, शोभा ब्रूटा)

शोध संरचना

भूमिका :– तन्त्र का परिचय

अध्याय प्रथम :– भारतीय चित्रकला में तन्त्र कला की पूर्व स्थिति

1.1– प्रागैतिहासिक कला

1.2– सिन्धु घाटी कला

1.3– अपभ्रंष शैली

1.4– राजस्थानी शैली

1.5– पहाड़ी शैली

अध्याय द्वितीय :– आधुनिक चित्रकला में तन्त्र कला का उद्‌भव व विकास

2.1– दर्षन के आधार पर

2.2– धर्म के आधार पर

2.3– विज्ञान के आधार पर

2.4– साहित्य के आधार पर

अध्याय तृतीय :– आधुनिक प्रमुख तन्त्र चित्रकारों का व्यक्तित्व

3.1– प्रारम्भिक षिक्षा

3.2– कला प्रेरणा स्त्रोत एवं प्रभाव

3.3– प्रमुख प्रदर्षनियां, सम्मान आदि

अध्याय चतुर्थ :– आधुनिक प्रमुख तन्त्र चित्रकारों की कृतियों का अध्ययन

4.1– विषय वस्तु के आधार पर

4.2– चित्रकला की लाक्षणिक प्रवृत्तियां

4.3– चित्रण विधि के आधार पर

अध्याय पंचम् :– आधुनिक प्रमुख तन्त्र चित्रकारों की कृतियों का कला तत्वों के आधार पर अध्ययन

5.1– रेखा

5.2– रूप भेद

5.3– वर्ण

5.4– संयोजन

5.5– सामन्जस्य

5.6– सन्तुलन

5.7– अन्तराल

5.8– प्रमाण

5.9– सादृष्य

अध्याय षष्ठम् :– आधुनिक प्रमुख तन्त्र चित्रकारों की कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन

6.1– काल के आधार पर

6.2– मनोवैज्ञानिकता के आधार पर

6.3– कलात्मकता के आधार पर

6.4– तकनीकि के आधार पर

6.5– उपयोगिता के आधार पर

उपसंहार :–

- आधुनिक प्रमुख तन्त्र चित्रकारों पर भारतीय संस्कृति की प्रभाव
- आधुनिक प्रमुख तन्त्र चित्रकारों का समकालीन कला में योगदान

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

- हिन्दी
- अंग्रेजी
- शोध पत्र–पत्रिकाऐं

- सूचिपत्र (कैटलॉग)
- समाचार पत्र
- वेबसाइटस
- चित्र सूची

परिषिष्ट :–

- चित्रकारों से साक्षात्कार
- विभिन्न कला समीक्षकों के विचार
- तकनीकि शब्दों का अर्थ
- समाचार पत्र

तन्त्र कला का परिचय तन्त्र परम शास्त्र के रूप में जाना जाता है। तन्त्र दर्षन की शाखा षिवाद्वैता का भारतीय चिन्तनषील आत्मिक विद्या में विषेष योगदान है, तन्त्र में अद्वैता का अर्थ अनन्त या स्थायी रूप में समान समय में प्रकट षिव व शक्ति है जो कि तन्त्र दर्षन के परम सत्ता को स्थापित करते है। षिव परम शक्ति का अस्पष्ट रूप व शक्ति इसका सम्पूर्ण रूप है।

कुण्डलिनी, मन्त्र और यन्त्र ये तीन तन्त्र साधना के रहस्यात्मक सिद्धान्त हैं। इस रहस्य की वास्तविकता केवल रहस्यमय अनुभवों से ही प्रकट हो सकती है। परम शक्ति की सत्ता को आत्मिक विद्या की किसी भी व्याकरण द्वारा व्याख्यायित नहीं किया जा सकता। तन्त्र साधना का रहस्यात्मक अनुभव प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष का विस्तृत रूप है। आन्तरिक अनुभव के द्वारा एक योगी वास्तविकता को गहरायी से जान पाता है।

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत भारतीय चित्रकला में तन्त्र कला की पूर्व स्थिति जो कि कुछ कम व धुंधले रूप में लगभग 5000 ई.पू.–3000 ई.पू. के मध्य प्रकाष में आयी है, कला के आरम्भिक स्वरूप को व उसके बदलते स्वरूप में सिन्धु घाटी सभ्यता जो कि प्रमाणित रूप से तान्त्रिक संस्कृति के रूप में स्वीकृत है। कला के बदलते स्वरूप के साथ बढ़ते हुये क्रम में अपभ्रंष शैली, राजस्थानी शैली व पहाड़ी शैली में तन्त्र कला का विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास करूँगी।

तन्त्र साधना वास्तव में जीवन के सत्य के चार स्तरों धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति का साधन है। प्रायः यह गलत धारणा स्वीकारी जाती है कि तन्त्र साधना मात्र मोक्ष प्राप्ति का साधन है, मनुष्य का जीवन विविध आयामी है और जो साधना जीवन के उपरोक्त चार स्तरों को पूरा करने में असमर्थ होती है, जो कि एक दूसरे का आत्मिक प्रगति व कुषलता के लिये अनुसरण करते हैं वह अन्त तक व्यर्थ रहती है।

तन्त्र और वेद भारतीय संस्कृति व सभ्यता की दो शाखायें हैं। तन्त्र प्राचीन भारत की पहचान है। यह वह धार्मिक समूह है जिसमें वेद शाखा स्वरूप कार्यरत है, परन्तु इनका पूर्ण स्पष्ट या प्रत्यक्ष विरोध और संघर्ष काफी समय तक के लिये पृथक हो गया व दोनों हिन्दु सभ्यता के संघटन में आत्मसात हुये। तन्त्र आगम है और वेद निगम है। तन्त्र आध्यात्मिक जीवन के दोनों पक्षों काल्पनिक या सैद्धान्तिक व व्यवहारिक के साथ कार्य करता है जिनमें सैद्धान्तिक पक्ष निगम व व्यवहारिक पक्ष का अगम कहलाता है। निति शास्त्र के अनुसार आगम– आने की क्रिया का भाव या उत्पत्ति जो वेद शास्त्र, किसी धर्म के मुख्य ग्रन्थ जिन पर धर्म आश्रित हो। निगम– वेद की वह अदृश्य और स्थाई संस्था जिसे विधि के द्वारा शरीर अथवा शरीरधारी का रूप प्राप्त हुआ है। तन्त्र तत्व व मन्त्रों से व्यवहारित है जो पहले ब्रह्माण्डीय सिद्धान्त और बाद में रहस्यमयता से पूर्ण है।

द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत आधुनिक चित्रकला में तन्त्र कला का उद्‌भव बताते हुये विभिन्न चरणों में विभक्त अध्याय जिसमें दर्षन, धर्म, भाषा व लिपि तथा साहित्य के आधार पर अध्ययन का ध्येय रहेगा। भौतिकवादी विज्ञान वास्तविकता में कोई भी आध्यात्मिक दृष्टिकोण प्रस्तुत नहीं करता है, इसकी प्रक्रिया विष्लेषणात्मक है। यह तथ्यपरक संसार को ज्यामितीय रूपों व भौतिक संकल्पना की व्याख्या करता है। ये रूप व संकल्पनायें पूर्ण अमूर्त हैं। विज्ञान द्वारा वास्तविकता तक पहुँचना सदैव पक्षपात पूर्ण रहता है। भौतिकवाद ब्रह्माण्ड के मूल सिद्धान्तों को व्यक्त करने के लिये केवल यान्त्रिक साधनों का प्रयोग करता है परन्तु अब इसने अपने व्यवहार को परिवर्तित किया है क्योंकि इनके द्वारा वह ब्रह्माण्ड के मूल सिद्धान्तों को व्यक्त करने में असफल रहा। तन्त्र साधना से दर्षन शास्त्र व विज्ञान आत्मिक विद्या में सम्मिलित हैं। तन्त्र विज्ञान व आध्यात्म तथा वास्तविकता व आदर्ष को एक साथ सम्मिलित करता है। भारत में दर्षन शास्त्र पूर्ण चिन्तनषील न होकर जीवन को समझने का मार्ग है। आत्मिक ज्ञान दर्षनषास्त्र की एकता है यह जीवन के अस्तित्व पर निर्भर है।

तृतीय अध्याय में आधुनिक प्रमुख तन्त्र चित्रकारों का व्यक्तित्व व उनकी प्रारम्भिक षिक्षा, कला प्रेरणा स्त्रोत एवं उनकी कला में पड़ने वाले प्रभाव तथा प्रमुख प्रदर्षनियाँ व सम्मान आदि के विषय में अध्ययन करूँगी।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत आधुनिक प्रमुख तन्त्र चित्रकारों की कृतियों का अध्ययन व चित्रों की विषयवस्तु के आधार पर वर्गीकरण कर चित्रण विधि व विषेषताओं पर ध्यान केन्द्रित रहेगा।

पंचम् अध्याय के अन्तर्गत आधुनिक प्रमुख तन्त्र चित्रकारों की कृतियों का प्रमुख कला तत्वों (रेखा, रूपभेद, वर्ण, संयोजन, सामन्जस्य, सन्तुलन, अन्तराल, प्रमाण, सादृश्य) के आधार पर अध्ययन करूँगी।

ष्षष्ठम् अध्याय के अन्तर्गत आधुनिक प्रमुख तन्त्र चित्रकारों की कृतियों का काल, मनोवैज्ञानिकता, कलात्मकता, व्यवसायिकता, उपयोगिता तथा तकनीकि के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करूँगी।

उपसंहार के अन्तर्गत आधुनिक प्रमुख तन्त्र चित्रकारों का चित्रकला में योगदान बताते हुये आधुनिक तन्त्र चित्रकारों पर भारतीय संस्कृति की छाप व आधुनिक प्रमुख तन्त्र चित्रकारों का समकालीन कला में योगदान पर चर्चा करूँगी।

दिनाँक :– **साक्षी गुप्ता**

शोध छात्रा

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कलिंगवुड, आर. जी. : 1972, *कला के सिद्धान्त*, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।
2. झा, चिरंजी लाल : 1972, *कला के मूल तत्व*, कला पुस्तक प्रकाषक, गाजियाबाद।
3. दामोदरन, के. : *भारतीय चिन्तन परम्परा*, पीपुल्स पब्लिसिंग हाऊस, नई दिल्ली।
4. द्विवेदी, प्रेम शंकर : 2007, *भारतीय चित्रकला के विविध आयाम*, कलाप्रकाषन, वाराणसी।
5. शुक्ल, रामचन्द्र : 2006, *आधुनिक चित्रकला*, साहित्य संगम नया, इलाहाबाद।
6. श्रीवास्तव, ए. एल. : *भारतीय कला प्रतीक*, उमेष प्रकाषन, इलाहाबाद।

BIBLIOGRAPHY

1. Bunce, Fredrick W. : 2001, *The Yantra of Dieties and their Numerological Foundation- an Iconographic Consideration*, D.K. Printedworld (P) Ltd. New Delhi- 110015.
2. Das, H. C. : 1981, *Tantricism- A Study of the Yogini Cult*, Sterling Publishers Private Limited, New Delhi.
3. Gupte, Ramesh, S. : 1972, *Iconography of the Hindus, Buddhist and Jains*, Bombay.
4. Gupta, Shyamala : 1999, *Art, Beauty and Creativity- Indian and Western Aesthetics*, D.K. Printworld (P) Ltd. New Delhi.
5. Hara, O. Hashnu : 1995, *Number, Name and Colour : As Applied to Character and Fate*, New Delhi.
6. Khanna, Madhu, : 1979, *Yantra-The Tantric Symbol of cosmic Unity*, Thames and Hudson Ltd, London.

7. Langer, Susanne, K. : 1976, *Feeling and Form- A Theory of Art Developed From Philosophy in a New Key*, Routledge and Kegan Paul Ltd. London.

8. Mookerjee, Ajit, : 1971, *Tantra Art- Its Philosophy & Physics*, Ravi Kumar Gallery, New Delhi.

9. Mookerjee, Ajit, Madhu Khanna : 1977, *Tantric Way (Art, Science and Ritual)*, Thames and Hudson, ©.

10. Mookerjee, Ajit, : 1971,*Tantra Asna-away to self- realization*, Ravi Kumar, Kumar Gallery, New Delhi, ©.

11. Mookerjee, Ajit : 1985, *Ritual Art of India,* London.

12. Randhawa, M. S. : 1977, *Beautifing India*, Thomson Press, India Ltd. New Delhi.

13. Rawson, Philip : 1973, *The Art of Tantra*, Vikas Publishing House Pvt. Ltd. India.

14. Singh, Lalan Prasad : 1973, *Tantra- Its Mystic and Scietific Basis*, Concept Publishing Company, Delhi.

15. Sinha, Indra : 1993, *The Great book of Tantra*, Desting Books, Rochester, Vermont, ©.

16. Sharma, Sudhakar : 2004, *The Heritage of Buddhist Pala Art*, Aryan Books International, New Delhi

17. Soulie, Bernard : 1982, *Tantra- Esotic Figures in Indian Art*, Production Liber S A, Friboury, Geneve.

18. Vashsistha, Neelima : 2010, Tradition and Modernity in Indian Arts the Twentith Century, Indian Institute of Advanced Study, Shimla

ENCYCLOPEDIA And DICTIONARY

1. Kumar, Rakesh : 2007, *Encyclopedia of Indain Paintings*, Anmol Publication Pvt. Ltd., New Delhi

पत्र–पत्रिकाऐं

1. अप्रैल, 2007, कादम्बिनी।
2. अक्टूबर, 2005, कला दीर्घा, अंक– 6.
3. अप्रैल, 2007, कला दीर्घा, अंक– 7.
4. अक्टूबर, 2011, कला दीर्घा, अंक– 12.

Journals

1. 1985, Biren De, Contemporary Indian Art Series, Lalit Kala Akademi.
2. 2004, Indian Art And Aesthetics Endeavours in Interpretation.
3. 2006, Indian art Vol. VIII, The Modern Revisited.
4. 1998-98, Journal of Indian Art History Congress KALAVol. V.
5. 1961, K.C.S. Paniker, Contemporary Indian Art Series, Lalit Kala Akademi.
6. 1992, P.T. Reddy, Contemporary Indian Art Series, Lalit Kala Akademi.

WEBSITES

1. www.exoticindiaart.com/painting/tantra
2. www.en.wikipedia.org/wiki/S._H._Raza
3. www.bbc.co.uk/programmes/p005cn96
4. www.tanyabaxtercontemporary.com/index.php?option=com_content&view=article&id=90&Itemid=103
5. www.shobhabroota.com

6. www.shobhabroota.com/writeups/
7. www.saffornart.com/artist/shobha-broota
8. https://www.storyltd.com/itemsV2.aspx?iid=3877
9. www.saffronart.com/artist/gulam_rasool_santosh
10. en.wikipedia.org/wiki/Gulam_Rasool_Santosh
11. www.indiaartcollectors.com/artist/GRSantosh
12. en.wikipedia.org/wiki/K._C._S._Paniker
13. www.saffronart.org/k_c_s_paniker
14. www.simplymalalees.com

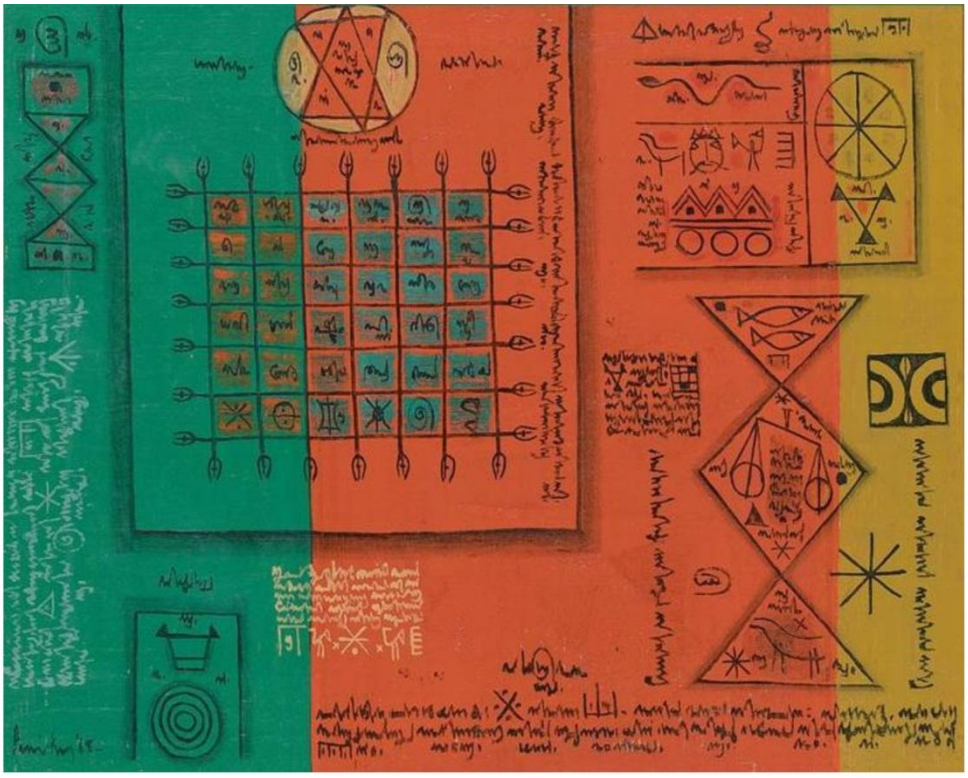

चित्र सं.–1 के.सी.एस.पणिकर, वर्ड्स एण्ड सिम्बल्स ऑन रिवर्स, तैल चित्रण, 68.6x87.4 सेमी0

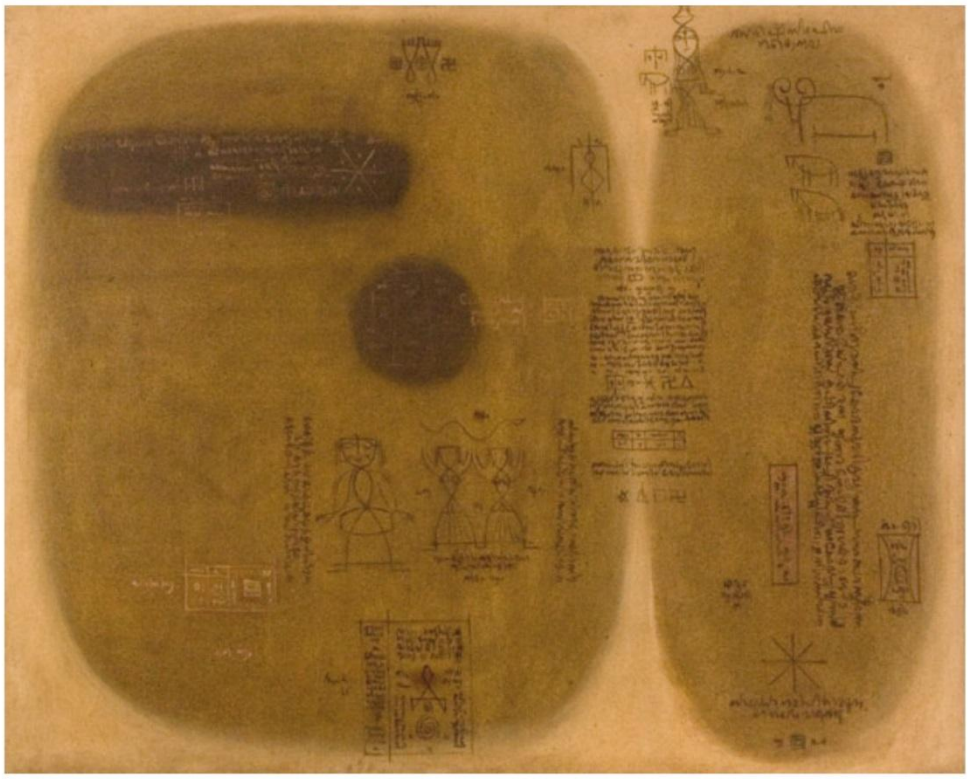

चित्र सं.–2 के.सी.एस.पणिकर, वर्ड्स एण्ड सिम्बल्स, तैल चित्रण,151x121.3 सेमी0, 1985

चित्र सं.–3 एस.एच.रज़ा, सिनिक एलिमेन्ट्स, लिथोग्राफ ऑन पेपर, 180x180 सेमी०, 2003

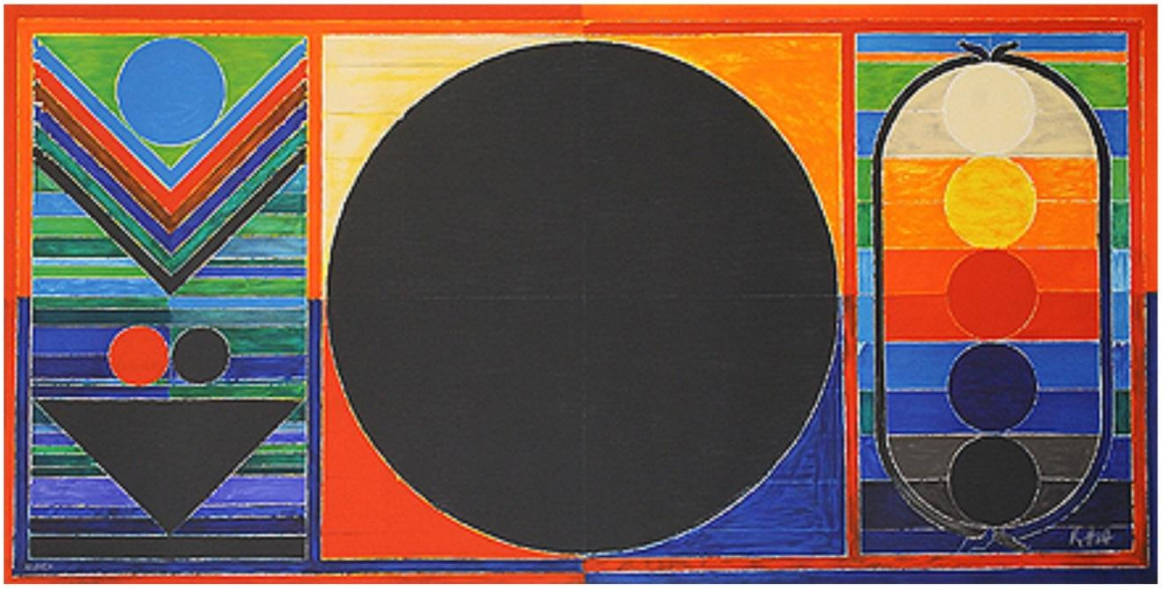

चित्र सं.–4 एस.एच.रज़ा, अर्बरे बिन्दु सिनिक एलिमेन्ट्स, लिथोग्राफ ऑन पेपर, 55.88x109.22 सेमी0, 2003

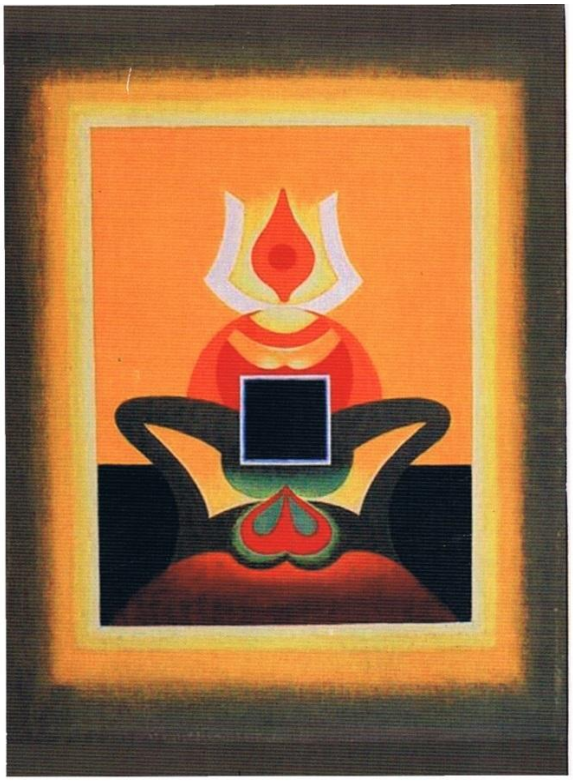

चित्र सं.–5 जी.आर.संतोश, अन्टाइटल्ड, तैल चित्रण, 45x10 सेमी०, 1974

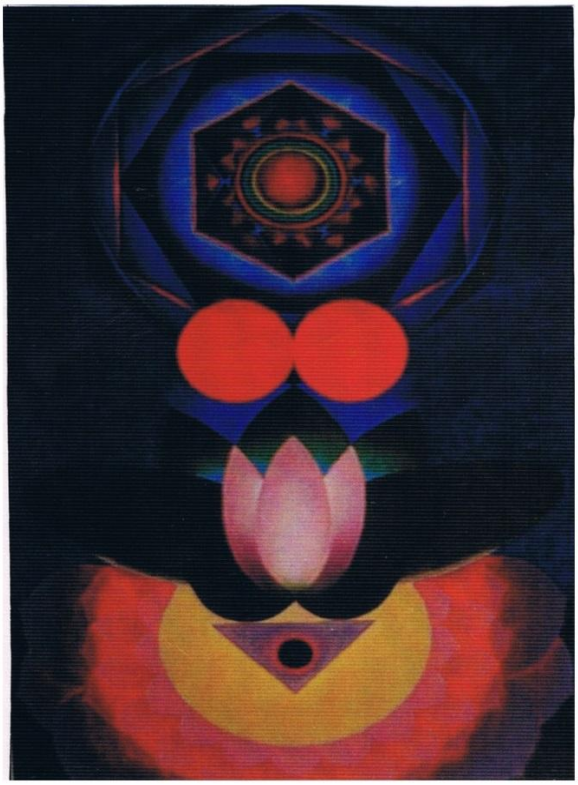

चित्र सं.–6 जी.आर.संतोश,अन्टाइटल्ड, तैल चित्रण, 44.5x31.7 सेमी०, 1985

चित्र सं.–7 भोभा ब्रूटा, डिविनिटी, तैल चित्रण, 87.5x87.5 सेमी0, 1998

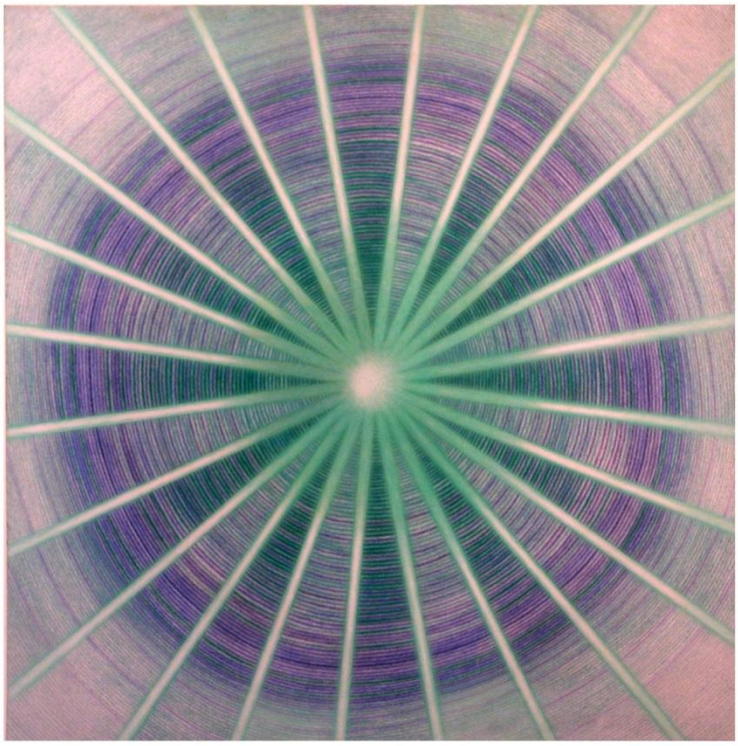

चित्र सं.–8 भोभा ब्रूटा, डाइटी, तैल चित्रण, 180x180 सेमी0, 2003